विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 08-11-2021

वर्ग अष्टम शिक्षक -राजेश कुमार पाण्डेय

एन॰ सी॰ ई॰ आर॰ टी॰ पर आधारित

छठ व्रत की शुभकामनाएं।

आज का गृह कार्य

बहुव्रीहि समास की परिभाषा

“अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः” ‘अनेकमन्यपदार्थ’- बहुव्रीहि समास में समस्तपदों में विद्यमान दो में से कोई पद प्रधान न होकर तीसरे अन्य पद की प्रधानता होती है। इसमें अनेक प्रथमान्त सुबन्त पदों का समस्यमान पदों से अन्य पद के

अर्थ में बहुव्रीहि समास होता है। जैसे- शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा = शुक्लाम्बरा, लम्वं उदरं यस्य सः = लम्बोदरः, महान् आत्मा यस्य सः = महात्मा ।

बहुव्रीहि समास के उदाहरण

शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा = शुक्लाम्बरा

लम्वं उदरं यस्य सः = लम्बोदरः ।

महान् आत्मा यस्य सः = महात्मा

बहुव्रीहि समास के भेद

बहुव्रीहि समास के दो मुख्य भेद होते हैं - समानाधिकरण बहुव्रीहि और व्यधिकरण बहुव्रीहि । दोनों का विवरण इस प्रकार है-

1. समानाधिकरण बहुव्रीहि

इस समास में प्रधान पद विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य तथा सामासिक पद में अन्य पद की प्रधानता होती है। जैसे-

दश आननानि यस्य सः = दशाननः

जितानि इन्द्रयाणि यस्य सः = जितेन्द्रियः

2. व्यधिकरण बहुव्रीहि

इसमें समस्यमान पद भिन्न-भिन्न विभक्तिवाले होते हैं। इस समास में विशेषण-विशेष्य का भाव नहीं रहता है। जैसे-

चन्द्रः(प्रथमा विभक्ति) शेखरे(सप्तमी विभक्ति) यस्य सः = चन्द्रशेखरः

बहुव्रीहि समास कुछ अन्य भेद

1. तुल्ययोग बहुव्रीहि

इसमें ‘सह’ (साथ) के द्वारा एक के साथ दूसरे का भी किसी क्रिया के साथ समान योग होता है। जैसे- पुत्रेण सह = सपुत्रः ।

2. कर्मव्यतिहार बहुव्रीहि

इसमें लड़ाई का बोध होने पर तृतीयान्त और सप्तम्यन्त पदों के साथ जो समास होता है, यानी जिस समास में क्रिया की अदला-बदली होती है। जैसे- केशेषु-केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् इति केशाकेशि (परस्पर केशों (बालों) को पकड़-पकड़ कर लड़ी गई लडाई).

3. नञ् बहुव्रीहि

इसमें नञ (नहीं) शब्द के साथ समास होता है। जैसे- अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः = अपुत्रः।

4. मध्यमपदलोपी बहुव्रीहि

इसमें बीच के पदों का लोप हो जाया करता है, परन्तु अन्य तीसरे पद की बात ही कही जाती है मध्यमपदलोपी तत्पुरुष की भाँति उन्हीं पदों में से किसी की प्रधानता नहीं रहती। जैसे-

निर्गतं धन यस्मात् सः (लोप)= निर्धनः।

नोट:

‘तेन सहेति तुल्ययोगे वोत्सिर्जनस्य’’- ‘सह’ के साथ समास होने पर विकल्प से ‘स’ या ‘सह’ हो जाता है। जैसे-पुत्रेण सह वर्तमानः = सपुत्रः / सहपुत्रः।

‘नित्यमसिचु प्रजामेधयोः’ - नञ् दुः और सु के साथ ‘प्रजा’ और ‘मेधा’ के साथ समास होने पर ‘असिच’। प्रत्यय होता है। पदान्त में ‘अस्’

लगता है और उसका 'वेधस्' के समान रूप चलता है। जैसे-

नास्ति प्रजाः यस्य सः = अप्रजाः

सु प्रजाः यस्य सः = सुप्रजाः

दुः मेधा यस्य सः = मुर्मेधाः